जिहादे फातिमा अलैहस्सलाम

मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी इजतेहादी साहिब (कराची)

दुख़्तरे रसूल (स0) हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) का ज़िक्र आते ही एक ऐसी हस्ती का तसव्वुर ज़ेहन में उभरता है जिसकी सारी ज़िन्दगी ग़म उठाते, मसाएब झेलते गुज़री हो। ढाई तीन साल के सिन में शे'बे अबी तालिब की सख़्तियाँ, कमसिनी में मक्का वालों के हाथों अपने बाप को ईज़ाएँ पहुचते देखना, मूनिस (मददगार) व ग़मगुसार माँ की जुदाई, चाहने वाले दादा अबुतालिब (अ0) का बिछड़ना, हिजरत का सदमा, मदीने की मुश्किल ज़िन्दगी; लेकिन इन तमाम मुशकिलों में सबसे बड़ा सहारा खुद पैग़म्बरे अकरम (स0) की ज़ाते गिरामी थी, पैग़म्बर की मौजूदगी में शहज़ादिये कौनैन (स0) हर सख़्ती को मुस्कुराकर गुज़ारती चली जा रही थीं। लेकिन बाप की जुदाई के बाद सिर्फ 75 या 95 दिन इतने सख़्त गुज़रे कि मासूमा (स0) ने इन दिनों को बदतरीन और सख़्ततरीन दिनों से तश्बीह दी है। यह है वह मुसलसल मसाएब से पुर ज़िन्दगी की तरफ इशारा कि जिसकी वजह से बीबी का नाम आते ही आँखों में नमी का आ जाना बाइसे तअज्जुब नहीं होता।

लेकिन हम यहाँ एक और अन्दाज़ में गुफ्तगू करना चाहते हैं। और वह है मासूम–ए–कौनैन की शुजाअत का वह बाब कि अगर हम थोड़ा सा ग़ौर करें तो हमें यह बात समझ में आ जायेगी कि मौलाए कायनात अली इब्ने अबी तालिब (अ0) के सामने मरहब व अन्तर, और ख़ैबर व ख़न्दक़ जिस अन्दाज़ में आये आप (अ0) ने उन्हें सर किया। लेकिन यही ख़ैबर व ख़न्दक़ जब हैदरे कर्रार (अ0) की ज़ौजा के सामने दूसरे अन्दाज़ में आये तो आपने उन्हें किस अन्दाज़ में ज़ेर किया। यह समझना बहुत ज़रूरी है आख़िर क्या बात है कि ख़ुदा का रसूल (स0) अपनी बेटी को ''उम्मु अबीहा'' (अपने बाप की माँ) का ख़िताब दे रहा है। अपने जिस्म का टुक्ड़ा क़रार दे रहा है, उसकी रिज़ा (मर्ज़ी) को अल्लाह की रिज़ा और उसके ग़ज़ब को अल्लाह का ग़ज़ब क़रार दे रहा है। ख़ुदा का रसूल (स0) जानता है कि उसकी बेटी कोई आम ख़ातून नहीं है बल्कि वह एक मुजाहेदा है ऐसी मुजाहेदा जिसने अपने बाबा की इंक़िलाबी तहरीक को बहुत नज़दीक से देखा है। वह देख रही है कि जब उसका बाबा मक्के के जाहिलों को हक़ की तरफ आने की दावत देता है तो वह उसे कैसी–कैसी अज़िय्यतें देते हैं। कभी ऐसा भी हुआ कि उन दुश्मनाने दीन ने पैग़म्बरे अकरम (स0) के जिस्मे अतहर पर कूड़ा फेंका यहाँ तक कि ऊँट की ओझड़ी (नऊज़ु बिल्लाह यानि अल्लाह की पनाह) तक डाल दी। और यह छोटी सी बच्ची अपने बाबा की मदद करती है। न सिर्फ यह कि पैग़म्बर (स0) के जिस्म से इस गन्दगी को दूर करती है बल्कि घर वापस आकर अपने दादा जनाबे अबुतालिब से इन कुफ्फार की शिकायत करती है जिसके नतीजे में हज़रत अबुतालिब (अ0) अपने बेटों, भतीजों, और दीगर हाशमी जवानों के साथ उन कुफ्फार पर धावा बोलते हैं और अबुजहल जैसे दुश्मनाने रसूल (स0) को पटख़कर वही ग़लाज़त उसके चेहरे पर मल देते हैं।

कमसिनी ही में इस बच्ची ने अपने आपको आने वाले हालात के लिये तैय्यार कर लिया था।

क़ुदरत ने इस बच्ची के हमसर (वर) के तौर पर अली (अ0) का इन्तिख़ाब इसलिए किया था कि मर्दों में भी बहादुर अली (अ0) से बेहतर कोई न था और औरतों में फातिमा (स0) जैसी बहादुर बीबी कोई न थी। यह फातिमा ज़हरा (स0) की ज़ात है कि अगर यह न होतीं तो अहलेबैते रसूल (स0) की पहचान कराने वाला कोई दूसरा न हो सकता था। ''हुम फातिमतु व अबूहा व बअ्लुहा वबनूहा'' का जुमला बता रहा है कि फ़ातिमा (स0) के सिवा जिससे से भी तआर्रुफ कराया जाता ग़ैर के दाख़िले का इमकान मौजूद रहता है। यही वह हस्ती है जो रिसालत, विलायत और इमामत को मुत्तहिद और महफ़ूज़ कर देती है। जंगे ओहद में मैदान की तरफ जाना रसूल (स0) और अली (अ0) के ज़ख़्मों की देखभाल, उनकी तीमारदारी, कमसिनी में घरबार की ज़िम्मेदारी।

यह शरफ फातिमा का है कि उसकी औलाद, औलादे रसूल कहलायी, हसनैन (इमाम हसन व हुसैन) की सूरत में इस्लाम के मुहाफ़िज़ तैयार करना और ज़ैनब (स0) व उम्मे कुलसूम (स0) जैसी शेरदिल बेटियाँ जो फातिमा जैसी माँ की आग़ोश में परवरिश पाकर कूफ़े व शाम के बाज़ारों और दरबारों को अपने ख़ुतबों से हिलाकर रख देंगी।

अगर आप जनाबे ज़ैनब से पूछेंगे कि तक़रीर का यह बातिलशिकन (बातिल तोड़) अन्दाज़ किस से सीखा तो मुझे यक़ीन है कि जवाब यही मिलेगा कि यही बातिलशिकन अन्दाज़ दिखाने के लिये तो मेरी माँ जेहरा (स0) मुझे ग़ासिब के दरबार में ले गयी थीं। और हक़ीक़त भी यही है कि दुख़्तरे रसूल (स0) के सामने आने वाले तमाम दौर थे। वरना माले दुनिया से अहलेबैत को क्या सरोकार हो सकता था। फिदक तो एक बहाना था। ज़ालिमों के ज़ुल्म को आश्कार करने का।

बक़ौले ''सरोश'' के:–

मै तेरे क़ुर्बान शहज़ादी फिदक के क़िस्से में यह सियासत
जो तू न उठती तो उठ न सकता, ख़िलाफ़ते ग़ासिबा का पर्दा

हसन (अ0), हुसैन (अ0), ज़ैनब (स0), उम्मे कुलसूम (अ0), जैसे मुजाहिद बच्चों को एक मुजाहिदा माँ की आग़ोश दरकार है। और कायनात में ऐसे बहादुर इसलिए नहीं मिल सकते कि किसी बच्चे को फातिमा (स0) जैसी माँ नहीं मिल सकती। फ़िदक का मारका था कि सिवाय ख़ातूने जन्नत (जनाबे ज़हरा स0) के इसे कोई सर न कर सकता था।

हालात व वाक़ेआत इस तरह के हो गये थे कि फातेहे ख़ैबर व ख़न्दक़ हैदरे कर्रार (अ0) अगर तलवार को बेनियाम करते तो इस्लाम टुक्ड़े–टुक्ड़े हो जाता और अबुतालिब के बेटे पर हुकूमत की ख़ातिर ख़ूँरेज़ी करने का इल्ज़ाम थोप दिया जाता। साज़िश करने वाले ख़ुश थे कि उन्होंने एक तरफ़ अली (अ0) से उसका हक़ छीन लिया है और दूसरी तरफ अली (अ0) को ज़ुलफ़िक़ार के इस्तेमाल से भी रोक दिया है। ऐसे में दुख़्तरे रसूल (स0) मैदाने अमल में आती हैं और अपने तारीख़ी ख़ुतबे से बातिल को अबदी रुस्वाई से दोचार करती हैं। अब क़यामत तक बातिल फिदक की रुस्वाई से पीछा छुड़ाना चाहता है मगर फिदक नंग व आर (ज़िल्लत व रुस्वाई) बनकर बातिल के साथ है। यही वह मस्जिदे नबवी में दिया जाने वाला ख़ुत्बा है जिस में शहज़ादि–ए–कौनैन दूसरी ख़्वातीन के अलावा अपनी मासूम बच्चियों ज़ैनब (स0) और उम्मे कुलसूम (स0) को भी हमराह लाई थीं ताकि दोनों शहज़ादियाँ माँ के लहजे को अच्छी तरह ज़ेहननशीन कर लें और दिल में उतार लें।

फातिमा ज़हरा (स0) की मुख़्तसर सी ज़ाहिरी

बक़िया पेज–14 पर

इन्सान ज़मीन पर रखे सामान को नज़र अन्दाज़ कर देता है सब जानते हैं अच्छी खूबसूरत क़ीमती चीज़ को छुपाकर शीशे में रखा जाता है शीशे में रखी चीज़ की तरफ सब बढ़ते हैं इसी तरह औरत है इसका शीशा पर्दा है कि अगर वह पर्दे में है तो साहेबे इज़्ज़त व तकरीम है लेकिन अगर बेपर्दा है तो हर इन्सान ज़मीन पर पड़े सामान की तरह ठोकर मार कर आगे बढ़ जायेगा।

लेकिन बदक़िस्मती यह है कि इस दौर की औरतें खुद इस बात को सोचती है कि औरत पर्दे में रहकर मजबूर हो जाती है और बेबस हो जाती है जबकि ऐसा नहीं है। तो इन औरतों के लिए जीती जागती मिसाल जनाब फातमा ज़ेहरा (अ0) हैं कि उन्होंने पर्दे में रहकर अपना हक़ तलब किया, पर्दे में रहकर बच्चों की लाजवाब परवरिश की, पर्दे में रहकर ओहद में पैग़म्बर (स0) की मदद की जबकि जनाब फातमा के दौर में ज़ाते औरत से ही नफरत की जाती थी लेकिन आज के दौर में औरत को 100 प्रतिशत जीने का हक़ है।

आज के ज़माने की एक ख़ास बात व खुसूसियत यह है कि आज कल जब पर्दे की दावत दी जाती है तो लोग एक जवाब देते हैं कि पर्दा करने की ज़रूरत क्या है? आँख़ और दिल तो पाक हैं।

मैं उनके जवाब में कहूँगी कि शैतान तो हमेशा साथ रहता है जब वह जनाबे आदम को बहका सकता है तो बन्दए मआसी व गुनाहगार किस तरह दावा कर सकते हैं कि शैतान हमको नहीं बहका सकता।

अबु अब्दुल्लाह (अ0) फरमाते हैं:– ''नामहरम की तरफ निगाह करना शैतान की तरफ से फेंका हुआ तीर है और कितनी निगाहें ऐसी हैं जिनकी हसरतें तवील हो जाती हैं।''

लेकिन अगर औरत पर्दे में रहे तो यह नौबत ही नहीं पहुँचेगी कि शैतान की तरफ से तीर आये। (फिर किसी की हसरतें भी तवील न होंगी।)

बेपर्दा रहना शैतान का फेंका हुआ एक तीर है जब औरत बेपर्दा रहती है तो मुआशरा में फसाद बरपा हो जाता है। इसी बिना पर खुदा ने पर्दे का वाजिब क़रार दिया है। औरत सिर्फ पर्दे की आग़ोश में खूबसूरत व बेहतर लगती है जिस तरह कोई फुलवारी गुलदान में अच्छी लगती है उसी तरह औरत पर्दे की आग़ोश में अच्छी लगती है।

बस रब्बे करीम से हमारी दुआ यही है कि हमको भी शहज़ादी–ए–कौनैन की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफीक़ अता फरमाए। और तमाम जहान की औरतों को शैतानी वसवसे से दूर रखे उनके हिजाब (पर्दे) को महफूज़ रखे और जो बेहिजाब है उनको हिजाब करने की तौफीक़ अता फरमाए।

बक़िया जिहादे फातिमा (अ0).................

ज़िन्दगी तवील जिहाद से मअमूर (भरी पुरी) है। फातिमा (स0) के सिवा कोई ख़ातून नहीं जो रसूल (स0) के बाद आने वाले ज़माने में मुसलमान ख़्वातीन के लिये नमून–ए–अमल बन सके। दुख़्तरे रसूल (स0) ने बेटी बनकर, बीवी बनकर, और माँ बनकर हर किरदार को अज़मत अता कर दी। आप ने बता दिया कि औरत सिर्फ़ सिन्फे नाज़ुक ही नहीं बल्कि वक़्त पड़ने पर बातिल ताक़तों के लिये कारी ज़रब (सख़्त चोट पहुँचाने वाली) भी बन सकती है।

दुनिया का हर बड़ा इन्सान एक अज़ीम आग़ोश में परवरिश पाता है। इस मुख़्तसर सी गुफ्तगू को इस पैग़ाम पर ख़त्म करना चाहता हूँ कि ऐ फातिमा ज़हरा (स0) से मुहब्बत करने वाली बीबियों तुम बेटी हो, बहन हो, ज़ौजा या माँ हो, हर रिश्ता अज़ीम रिश्ता है यह तमाम रिश्ते मुहब्बतों के रिश्ते हैं। लेकिन वक़्त पड़ने पर इन तमाम मुहब्बतों को दीन पर कैसे निछावर किया जाता है यह दुख़्तरे रसूल (स0) से सीखो। आग़ोशे ज़हरा (स0) की तरबियत का असर कर्बला में देखो। किस तरह हुसैन (अ0) और ज़ैनब (स0) ने तमाम मुहब्बतों को नाना के दीन पर निछावर कर दिया। खुदाया! हमें तैफीक़ दे कि हम मादरे हुसैन (अ0) के जिहाद को समझ सकें। और पैग़ाम सुन सकें।

ऐ जबीने मुस्तफा यह तो बता
कितने सिज्दों का सिला है फातिमा (स0)